Dr. RANJEET KUMAR
Deptt. of History
H.D. Jain college, Ara.

Notes For – M.A. Sem-III, Unit-IV – Industry

वैश्वीकरण का प्रभाव दक्षिण एशिया में : भारतीय संदर्भ एवं अर्थव्यवस्था पर

औद्योगिक क्षेत्र पर वैश्वीकरण का प्रभाव :- भारतीय उद्योग पर वैश्वीकरण के प्रभाव तब शुरू हुए जब सरकार ने 1990 ई० के दशक की शुरुआत में देश के बाजारों को विदेशी निवेश के लिए खोल दिया। भारतीय उद्योग का वैश्वीकरण अपने विभिन्न क्षेत्रों जैसे - इस्पात, दवा, पेट्रोलियम, रसायन, कपड़ा, सीमेंट, खुदरा और बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग (बीपीओ) में हुआ।

वैश्वीकरण का अर्थ है, राष्ट्रों के बीच व्यापार अवरोधों का निराकरण और निजी प्रवाह के माध्यम से राष्ट्रों की अर्थव्यवस्थाओं का एकीकरण, वस्तुओं और सेवाओं में व्यापार और राष्ट्रों के बीच कॉर्पोरेट निवेश। प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में दुनिया भर में वैश्वीकरण में वृद्धि हुई है। भारत सरकार ने 1991 ई० में अपनी आर्थिक नीति में बदलाव किया, जिसके द्वारा उसने देश में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अनुमति दी। भारतीय उद्योग में वैश्वीकरण के प्रभावों का लाभ यह है कि कई विदेशी कम्पनियाँ भारत में उद्योग स्थापित की हैं; विशेष रूप से फार्मास्यूटिकल, बीपीओ, पेट्रोलियम, विनिर्माण और रासायनिक क्षेत्रों में और इसने देश के कई लोगों को रोजगार देने में मदद की है। इससे देश में बेरोजगारी और गरीबी के स्तर को कम करने में मदद मिली। इसके अलावा भारतीय उद्योग पर वैश्वीकरण के प्रभाव का लाभ यह है कि विदेशी कम्पनियाँ अपने साथ अत्याधिक उन्नत प्रौद्योगिकी लाती हैं और इससे भारतीय उद्योग को तकनीकी रूप से उन्नत बनाने में मदद मिली।

निर्यात और आयात पर प्रभाव :- वर्ष 2001-02 ई० में भारत का निर्यात और आयात क्रमशः 32572 और 38202 मिलियन था। कई भारतीय कम्पनियों ने अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में लगातार खिलाड़ी बनना शुरू कर दिया है। कृषि निर्यात देश के कुल वार्षिक निर्यात का लगभग 1.3 से 18% है।

→ 2000-01 ई० में 6 मिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक के कृषि उत्पादों को देश से निर्यात किया गया था; जिनमें से 23% अकेले समुद्री उत्पादों द्वारा योगदान दिया गया था। हाल के वर्षों में समुद्री उत्पादन देश के कुल कृषि निर्यात में एक सबसे बड़े योगदानकर्ता के रूप में उभरे हैं। जो कुल कृषि निर्यात का 5वाँ हिस्सा है। अनाज (उदाहरण बासमति चावल और गैर-बासमती चावल), तेल के बीज, चाय और कॉफी अन्य प्रमुख उत्पाद हैं जिनमें से प्रत्येक देश के कुल कृषि निर्यात में लगभग 5-10% की हिस्सेदारी है।

वैश्वीकरण के लाभ:-

→ कम्पनियों के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय बाजार है। और उपभोक्ताओं के लिए चुनने के लिए उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला है।

→ विकसित देशों से विकासशील देशों में निवेश के प्रवाह में वृद्धि, जिसका उपयोग आर्थिक पुनर्निर्माण के लिए किया जा सकता है।

→ देशों और अधिक से अधिक सांस्कृतिक संपर्क के बीच जानकारी के अधिक से अधिक प्रवाह ने सांस्कृतिक बाधाओं को दूर करने में मदद की है।

→ तकनीकी विकास के परिणामस्वरूप विकासशील देशों में ब्रेन ड्रेन का उल्टा असर हुआ है।